International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1036-1041 www.ijhssm.org

आपदा प्रबंधन में मीडिया की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन: बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में

ओमप्रकाश*
डॉ. संतोष कुमार**

*शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, कला संकाय, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़-*49201*, ईमेल: *ajayomprakash77488@gmail.com*

**सह-प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, कला संकाय, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ *492015*

Date of Submission: 04-08-2024 Date of Acceptance: 15-08-2024

शोध सारांश: : बाढ़, सूखा, और भुखमरी जैसी विभिन्न स्थितियाँ सीधे तौर पर मानवीय क्रियाकलापों से संबंधित होती हैं। इसी तरह, जल निकास कुप्रबंधन, वायु और जल प्रदूषण, और वैश्विक तापमान में वृद्धि भी मानवीय क्रियाकलापों का ही परिणाम हैं। मानवीय या राष्ट्रीय विकास की तेज गति से खनिज संसाधनों की खुदाई और जंगलों की कटाई भू-स्खलन और कीचड़ के बहाव के लिए जिम्मेदार हैं। इस तरह की प्राकृतिक आपदाओं से बचने और उनके प्रबंधन के विभिन्न उपाय होते हैं, लेकिन आम जनता के पास आपदा प्रबंधन संबंधी ज्ञान का प्रसार नहीं हो पाता है। इसमें मीडिया के सभी रूपों को आगे आना चाहिए ताकि आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में बेहतर कार्य किया जा सके। इसी संदर्भ में, बस्तर क्षेत्र में आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, और सोशल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों और तथ्यों का विश्लेषण करने के लिए अन्वेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध प्रारूप का उपयोग किया गया है, क्योंकि शोध का मुख्य उद्देश्य आपदा की रोकथाम, शमन, और राहत में मीडिया की भूमिका का गहन अध्ययन करना और आपदा प्रबंधन में मीडिया के हस्तक्षेप को बढ़ाने के लिए उपयुक्त तरीकों की पहचान करना है। इस शोध ने आपदा प्रबंधन में मौजूदा मीडिया की भूमिका और इसके कामकाज की पड़ताल के लिए स्थितिजन्य विश्लेषण का उपयोग किया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार, बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित और प्रसारित होने वाले मीडिया तंत्र में आपदा प्रबंधन की खबरों का प्रकाशन तो किया जाता है, लेकिन ये खबरें आम जनता के लिए बहुत कम उपयोगी होती हैं।

कुंजी शब्द – आपदा, प्रबंधन, मीडिया, बस्तर, सोशल मीडिया।

परिचय

आपदा एक ऐसी प्राकृतिक या मानवजनित समस्या है जो किसी भी समय किसी भी क्षेत्र में आ सकती है। ऐसी घटनाओं से बचने के लिए आपदा प्रबंधन जैसे कार्य किए जाते हैं। आपदा प्रबंधन को प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि आपदा प्रभावित क्षेत्रों में उपलब्ध सभी प्रकार की सूचनाएं पूरी तरह स्पष्ट हों और सामान्य लोगों की पहुंच में हों। आपदाएँ प्राकृतिक या अप्राकृतिक, अर्थात मानवजनित, प्रकार की हो सकती हैं। कई प्राकृतिक आपदाओं का मुख्य कारण मानव क्रियाकलाप हो सकते हैं, जो पर्यावरण की उपेक्षा या प्रकृति से छेड़छाड़ के कारण उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं को समय पर रोका जा सकता है। भारतीय प्रेस परिषद ने कहा है कि "सभी मानवजनित आपदाओं में से कई को रोका जा सकता है।" इसके लिए जनसंचार माध्यमों का सही ढंग से उपयोग करने की आवश्यकता है। जनसंचार माध्यमों से लोगों को शिक्षित किया जा सकता है और सूचनाएं प्रसारित की जा सकती हैं। इसके साथ ही, मानव क्रियाकलापों के दुष्परिणामों और उन कार्यों के बारे में बताया जा सकता है जो इस प्रकार की आपदाओं को बढ़ाते हैं।

आपदाएँ अप्रत्याशित घटनाएँ हैं जो सामान्य जीवन में अचानक बड़े पैमाने पर व्यवधान उत्पन्न करती हैं। ये व्यवधान पर्यावरणीय या गैर-पर्यावरणीय कारणों से हो सकते हैं, जिससे जान-माल का भारी नुकसान होता है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान के अनुसार, आपदा को "प्रकृति या मानव निर्मित घटना के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो समाज के सामान्य जीवन में अचानक व्यवधान पैदा करती है, जिससे जान-माल को इस हद तक नुकसान होता है कि उपलब्ध सामान्य सामाजिक और आर्थिक संसाधन आपदा के बाद सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए अपर्याप्त होते हैं" (राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान, 2005)। इसी तरह, Pal et al. (2013) ने आपदा प्रबंधन में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करते हुए बताया है कि मीडिया आपदा की प्रारंभिक चेतावनी देने के साथ-साथ आपदा की घटनाओं का प्रसारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

नायर (2010) के अनुसार, आपदा प्रबंधन में मीडिया की भूमिका को समझने के लिए जनसंचार माध्यमों और आपदा न्यूनीकरण एवं नियंत्रण के महत्व को तीन आयामों - मंच, दर्शक, और व्यक्तिगत और सामूहिक प्रभाव के स्तर - के आधार पर अलग करना महत्वपूर्ण है। आपदा प्रबंधन में जनसंचार माध्यमों की आवश्यकता पर जोर देते हुए, उन्होंने मीडिया पेशेवरों और आपदा प्रबंधकों के बीच अंतर की पहचान करके उनकी उपयोगिता स्पष्ट की है। वर्तमान में ऐसी कई आपदाएँ हैं जो मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गई हैं, जैसे बाढ़, तूफान, सूखा, और भूस्खलन आदि। समाज का एक तपका हमेशा से असुरक्षित स्थानों पर निवास करता आ रहा है और लगातार विभिन्न आपदाओं से प्रभावित रहता है। उनके पास उन स्थानों पर रहने की

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1036-1041 www.ijhssm.org

मजबूरी भी होती है क्योंकि वहीं से उनकी आजीविका के साधन प्राप्त होते हैं। फिर भी, जनसंचार माध्यमों में यह चर्चा का विषय नहीं बनता है। यही समय है कि जनसंचार माध्यम को इस विषय पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसी तरह, राष्ट्रीय जनसंचार माध्यम भी आपदा नुकसान से निपटने, अफवाओं की रोकथाम, और नकारात्मक भावना को सकारात्मक भावना में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

1.आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना।

2. आपदा प्रबंधन में इलेक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना।

3. आपदा प्रबंधन में सोसल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों एवं तथ्यों का विश्लेषण करने के लिए अन्वेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध प्रारूप का उपयोग किया गया है, क्योंकि शोधकर्ता का मुख्य लक्ष्य आपदा की रोकथाम, शमन और राहत में मीडिया की भूमिका का गहन अध्ययन करना और आपदा प्रबंधन में मीडिया के हस्तक्षेप को बढ़ाने के लिए उपयुक्त तरीकों की पहचान करना है। शोधकर्ता ने आपदा प्रबंधन में मौजूदा मीडिया की भूमिका और इसके कार्यप्रणाली का पता लगाने के लिए स्थितिजन्य विश्लेषण का उपयोग किया है।

परिणाम एवं विश्लेषण

आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया की भूमिका

जिस तरह आपदा संबंधी घटनाएं घटित होती हैं, उस समय संबंधित खबरों को प्रिंट समाचार पत्रों में तुरंत प्रकाशित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि कोई भी प्रिंट समाचार पत्र हर आधे या एक घंटे में प्रकाशित नहीं होता है। चूंकि प्राकृतिक आपदाएं आकस्मिक होती हैं, इसलिए विभिन्न विभाग घटना के पूर्वानुमान के आधार पर सतर्क करते हैं। हालांकि प्रिंट समाचार पत्र तत्काल खबरों को घटनास्थल या प्रभावित लोगों तक नहीं पहुंचा पाते हैं, लेकिन आपदा संबंधी घटनाओं के पूर्वानुमान के समय सरकारी विभागों की रिपोर्टों का प्रकाशन करके लोगों में जागरूकता फैलाई जा सकती है। इसी क्रम में बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित होने वाले प्रिंट मीडिया की भूमिका का विश्लेषण किया गया है -

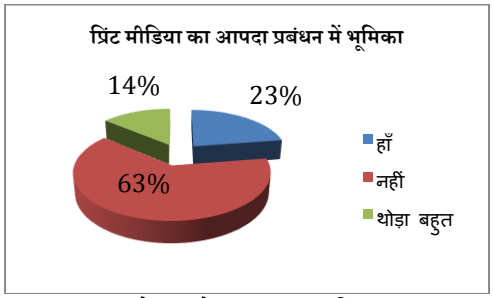

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 01: बस्तर संभाग में प्रिंट मीडिया का आपदा प्रबंधन में भूमिका की आवृत्ती

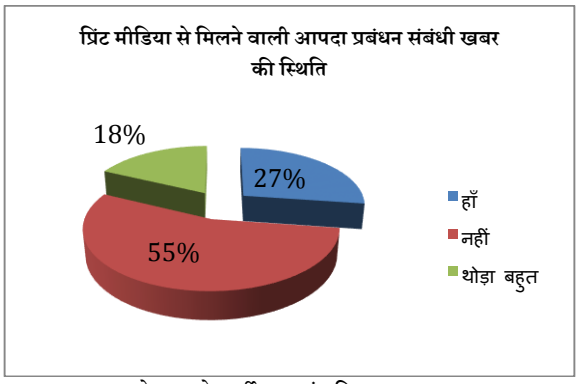

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 02: बस्तर संभाग में प्रिंट मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधी खबरों की आवृत्ती

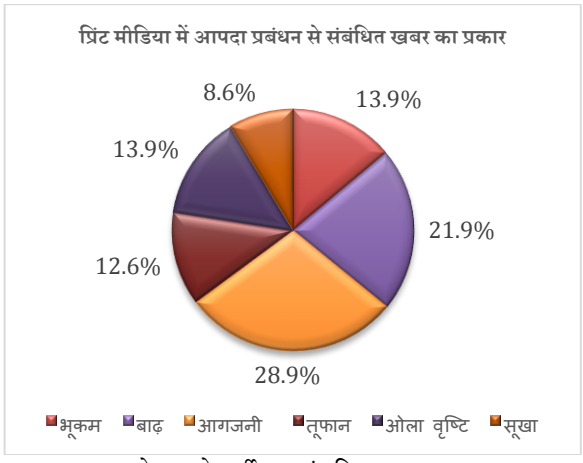

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 03: बस्तर संभाग में प्रिंट मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की आवृत्ती

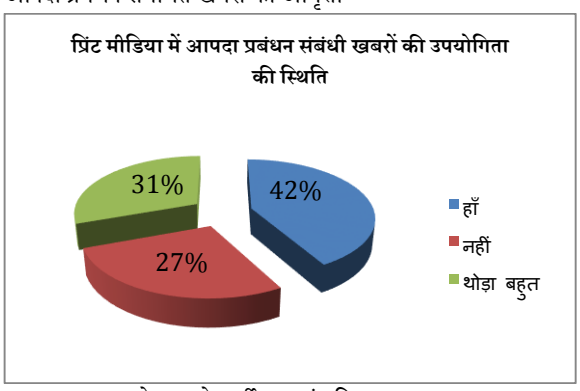

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 04: बस्तर संभाग में प्रिंट मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की उपयोगिता

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1036-1041 www.ijhssm.org

आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि आपदा से पूर्व विभिन्न घटनाओं का प्रकाशन प्रिंट मीडिया में किया जाता है, जिससे आम जन ऐसी खबरें पढ़कर आपदाओं से सचेत होकर बचाव संबंधी उपाय कर सकें। इस संदर्भ में बस्तर संभाग के पाठकों के विचारों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि प्रिंट मीडिया के माध्यम से आपदा प्रबंधन के संबंध में अधिकतर (63 प्रतिशत) लोगों में समझ का अभाव है। इसके साथ ही, आधे से अधिक (55 प्रतिशत) पाठकों के अनुसार प्रिंट मीडिया में आपदा प्रबंधन से संबंधित खबरों की कमी है। बस्तर संभाग में प्रकाशित होने वाले अखबारों में आगजनी, तूफान, बाढ़, भूकंप, ओलावृष्टि और सूखा संबंधी खबरों का प्रकाशन किया जाता है, और इस प्रकार की खबरों को 42 प्रतिशत पाठकों ने उपयोगी माना है जबकि 27 प्रतिशत लोगों ने इसे उपयोगी नहीं बताया है। आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया का महत्वपूर्ण स्थान होने के बावजूद, बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित होने वाले अखबारों में आपदा संबंधी जानकारी की कमी पाई गई है।

आपदा प्रबंधन में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका

सोशल मीडिया के आगमन और मोबाइल उपकरणों की सर्वव्यापकता ने आपदा प्रबंधन के परिदृश्य को काफी हद तक बदल दिया है (शाह एट अल., 2019) (लूना और पेनॉक, 2015) (बुसा एट अल., 2015) (कोलिन्स एट अल., 2016)। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म सूचना साझा करने, सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देने और संकट के समय प्रतिक्रिया प्रयासों के समन्वय के लिए शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरे हैं (अब्दुलहामिद एट अल., 2020) (लूना और पेनॉक, 2015)। आपदा प्रबंधन में सोशल मीडिया के प्रमुख लाभों में से एक इसकी वास्तविक समय संचार और सूचना साझा करने की सुविधा प्रदान करने की क्षमता है (लूना और पेनॉक, 2015) (बुसा एट अल., 2015)। आपदा के दौरान, व्यक्ति स्थिति की रिपोर्ट करने, मदद मांगने और प्रियजनों से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर सकते हैं (अब्दुलहमीद एट अल., 2020) (चेंग एट अल., 2020)। सूचना का यह तात्कालिक प्रसार स्थितिजन्य जागरूकता को बढ़ा सकता है, समय पर निर्णय लेने में सक्षम बना सकता है और आपातकालीन प्रतिक्रिया की समग्र प्रभावशीलता में सुधार कर सकता है (अब्दुलहमीद एट अल., 2020) (लूना और पेनॉक, 2015)। इसके अलावा, सोशल मीडिया भावनात्मक समर्थन और सामुदायिक लचीलेपन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है (चेंग एट अल., 2020) (अब्दुलहमीद एट अल., 2020)। लोगों को अपने अनुभव साझा करने, सांत्वना पाने और राहत प्रयासों का समन्वय करने के लिए आभासी स्थान बनाकर, सोशल मीडिया समुदाय की भावना को बढ़ावा दे सकता है और व्यक्तियों को आपदा के मनोवैज्ञानिक प्रभाव से निपटने में मदद कर सकता है (चेंग एट अल., 2020) (अब्दुलहमीद एट अल., 2020)।

अतः आपदा प्रबंधन की इस अवस्था में इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम की प्रमुख भूमिका होती है। उदाहरणस्वरूप, सरकारी विभाग आपदाओं से संबंधित सूचना प्रसारण के तथ्यों एवं आंकड़ों के प्रति जागरूक होते हैं। ऐसे में जनसंचार माध्यम का दायित्व है कि वह लोगों को इन विभागों से प्राप्त सूचनाओं एवं आंकड़ों का प्रसारण के माध्यम से जागरूक रख सके। मौसम संबंधी पूर्वानुमान, आँधी-तूफान संबंधी पूर्वानुमान, सुनामी संबंधी पूर्वानुमान को आमजन तक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से पहुंचाया जा सकता है। आपदा चेतावनी को वैज्ञानिक आधार पर गहराई से व्याख्या करनी चाहिए और चेतावनी जारी करनी चाहिए, जिससे इन आपदाओं से जन और धन की हानि से बचा जा सके। इसी क्रम में बस्तर संभाग में आपदा प्रबंधन में मीडिया की भूमिका का विश्लेषण किया गया है-

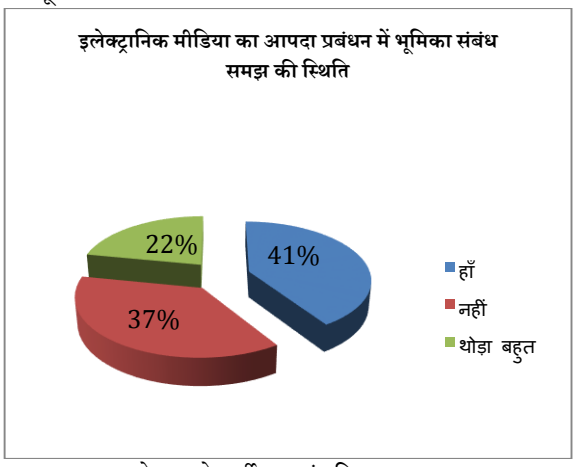

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 05: बस्तर संभाग में इलेक्ट्रानिक मीडिया का आपदा प्रबंधन के भूमिका संबंधित सामान्य समझ

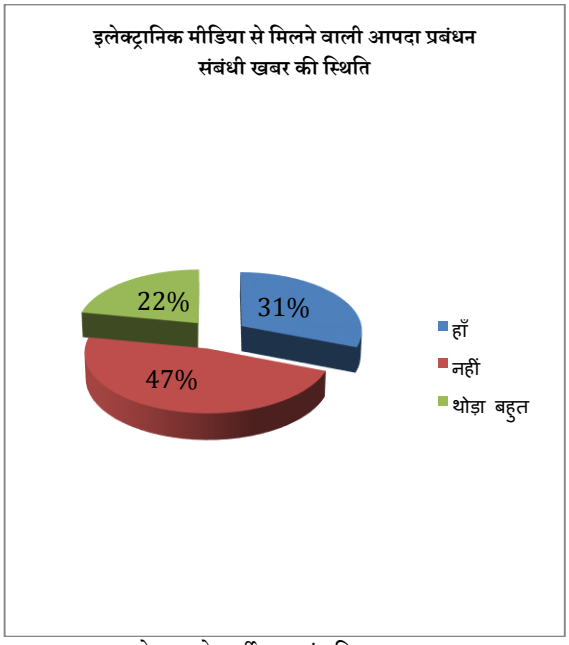

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1036-1041 www.ijhssm.org

आरेख क्रमांक 06: बस्तर संभाग में इलेक्ट्रानिक मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधी खबरों की आवृत्ती

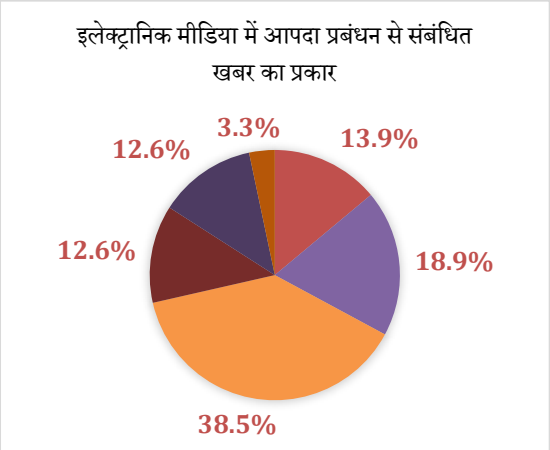

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 07: बस्तर संभाग में इलेक्ट्रानिक मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की आवृत्ती

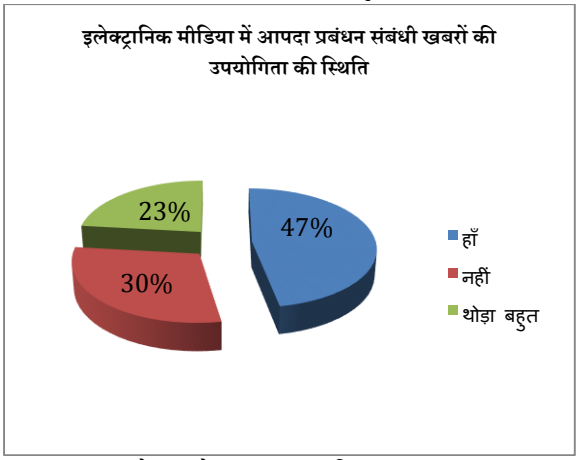

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 08: बस्तर संभाग में इलेक्ट्रानिक मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की उपयोगिता

आपदा प्रबंधन में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि यह आपदा से पहले, आपदा के दौरान और आपदा के बाद की विभिन्न घटनाओं को ऑडियो और वीडियो के माध्यम से प्रसारित करता है, जिससे लोग इन खबरों को सुनकर या देखकर आपदाओं के प्रति सचेत हो सकते हैं और बचाव संबंधी उपाय कर सकते हैं। इसके अलावा, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से आपदा राहत कार्यों में भी सहायता की जाती है। इस संदर्भ में, बस्तर संभाग के सूचनादाताओं के विचारों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि अधिकांश (41 प्रतिशत) लोगों को आपदा प्रबंधन के बारे में समझ है, जबकि 37 प्रतिशत सूचनादाताओं में इसकी समझ का अभाव पाया गया है। इसके साथ ही, 47 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में आपदा प्रबंधन से संबंधित खबरों का अभाव है। बस्तर संभाग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर प्रसारित चैनलों में आगजनी, तूफान, बाढ़, भूकंप, ओलावृष्टि, और सूखे से संबंधित खबरें प्रकाशित की जाती हैं। इनमें से 47 प्रतिशत सूचनादाताओं ने इन खबरों को उपयोगी बताया, जबकि 30 प्रतिशत ने उन्हें उपयोगी नहीं माना। आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया की भी महत्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित होने वाले अखबारों में आपदा संबंधी जानकारी का अभाव पाया गया है।

आपदा प्रबंधन मे सोसल मीडिया की भूमिका

हाल के वर्षों में सोशल मीडिया आपदा प्रबंधन के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में उभरा है (चेंग एट अल., 2020) (किबानोव एट अल., 2017) (लूना और पेनॉक, 2015)। प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, व्यक्ति अक्सर जानकारी प्राप्त करने, समय पर अपडेट प्राप्त करने, आपदा की भयावहता निर्धारित करने और दोस्तों और परिवार से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं (चेंग एट अल., 2020)। सरकारों और आपातकालीन प्रबंधन एजेंसियों ने भी जनता तक सूचना प्रसारित करने और प्रतिक्रिया प्रयासों के समन्वय में सोशल मीडिया के महत्व को पहचाना है (लूना और पेनॉक, 2015)। आपदा प्रबंधन में सोशल मीडिया के प्रमुख लाभों में से एक इसकी स्थितिजन्य जागरूकता और भावनात्मक समर्थन को बढ़ाने की क्षमता है (चेंग एट अल., 2020)। व्यक्तियों को वास्तविक समय की जानकारी और अपडेट साझा करने की अनुमति देकर, सोशल मीडिया विकसित स्थिति और प्रभावित समुदायों की जरूरतों के बारे में अधिक व्यापक समझ प्रदान कर सकता है (लूना और पेनॉक, 2015)। यह बदले में, आपातकालीन प्रतिक्रियाकर्ताओं और आपदा प्रबंधन टीमों को संसाधनों को अधिक प्रभावी ढंग से आवंटित करने और प्रभावित समुदायों की विशिष्ट आवश्यकताओं के लिए अपनी प्रतिक्रिया को अनुकूलित करने में मदद कर सकता है (किबानोव एट अल., 2017)। इसके अलावा, आपदाओं के दौरान सोशल मीडिया आत्म-संयोजन और सामुदायिक समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है (चेंग एट अल., 2020)। व्यक्ति राहत प्रयासों को व्यवस्थित करने, स्वयंसेवक बनने और ज़रूरतमंदों को सहायता प्रदान करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर सकते हैं, जिससे सरकारी एजेंसियों और सहायता संगठनों के प्रयासों को बढ़ावा मिलता है (लूना और पेनॉक, 2015)। हालाँकि, आपदा प्रबंधन में सोशल मीडिया का उपयोग अपनी चुनौतियों के बिना नहीं है। सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारित जानकारी की गुणवत्ता और विश्वसनीयता एक चिंता का विषय हो सकती है, क्योंकि गलत सूचना, झूठे अलार्म और प्रतिकूल अफ़वाहों का प्रसार प्रभावी आपदा प्रतिक्रिया में बाधा डाल सकता है (लूना और पेनॉक, 2015)। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, शोधकर्ताओं ने आपातकालीन प्रबंधन में सोशल मीडिया के प्रभाव और चुनौतियों को समझने के लिए एक रूपरेखा प्रस्तावित की है (लूना और पेनॉक, 2015)। यह रूपरेखा सूचना को सत्यापित करने, उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित सामग्री को प्रबंधित करने और अधिकारियों और जनता के बीच स्पष्ट संचार प्रोटोकॉल स्थापित करने के लिए

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1036-1041 www.ijhssm.org

प्रभावी रणनीतियों की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है। कुल मिलाकर, आपदा प्रबंधन में सोशल मीडिया की भूमिका एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है (लूना और पेनॉक, 2015) (चेंग एट अल., 2020)। जबकि सोशल मीडिया परिस्थितिजन्य जागरूकता, भावनात्मक समर्थन और सामुदायिक समन्वय के संदर्भ में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान कर सकता है, यह महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है जिन्हें आपातकालीन प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्ति प्रयासों में इन प्लेटफार्मों के प्रभावी और जिम्मेदार उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए संबोधित किया जाना चाहिए।

वर्तमान में, सभी सोशल मीडिया से परिचित हैं, जो सूचनाओं के त्वरित प्रसार में मुख्य भूमिका निभाता है। यह कहा जा सकता है कि सूचनाओं के तेजी से आदान-प्रदान में सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया है। सोशल मीडिया के माध्यम से आपदा ग्रस्त जनपद, स्थान, या क्षेत्र से त्वरित संपर्क स्थापित करके बचाव और राहत कार्य में तेजी लाई जा सकती है। इसके साथ ही, सोशल मीडिया के जरिए विभिन्न प्रकार की खबरों को शीघ्र प्रसारित करके सरकारी तंत्र को आपदा क्षेत्र में त्वरित कार्यवाही के लिए प्रेरित किया जा सकता है। चूंकि सोशल मीडिया आज के समय में एक बहुत ही प्रभावशाली संचार माध्यम के रूप में उभरकर सामने आ रहा है, इसलिए आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में सूचनाओं के प्रसार के लिए यह एक बहुत ही उपयोगी साधन हो सकता है।

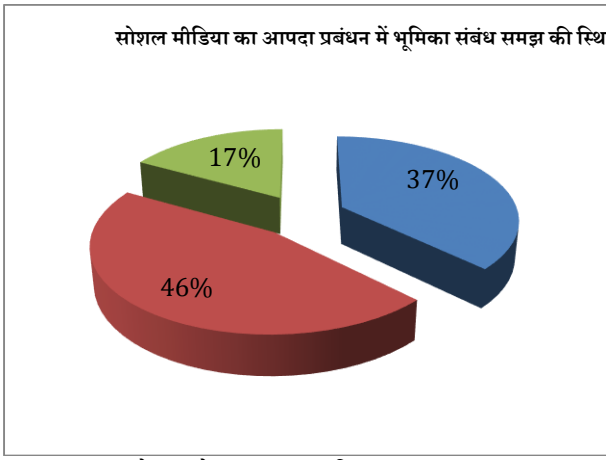

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 09: बस्तर संभाग में सोसल मीडिया का आपदा प्रबंधन के भूमिका संबंधित सामान्य समझ

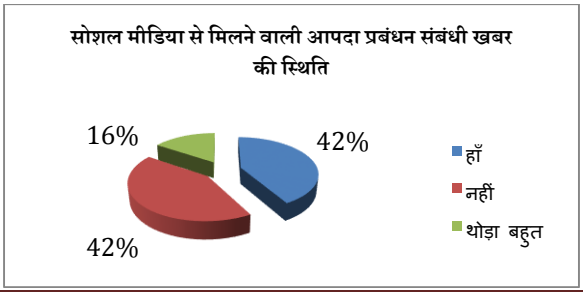

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 10: बस्तर संभाग में सोसल मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधी खबरों की आवृत्ती

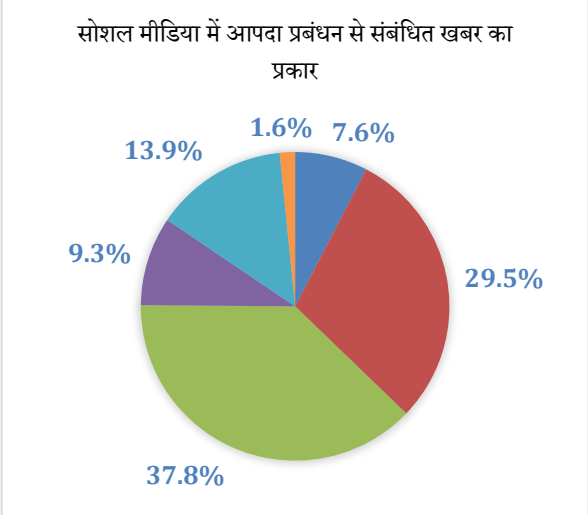

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 11: बस्तर संभाग में सोसल मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की आवृत्ती

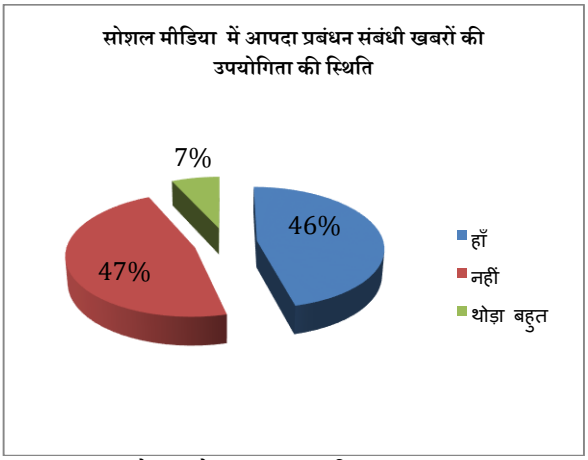

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 12: बस्तर संभाग में सोसल मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की उपयोगिता

वर्तमान में, सोशल मीडिया से सभी परिचित हैं क्योंकि यह खबरों या सूचनाओं के प्रसार का बहुत ही त्वरित माध्यम है। इस प्रकार, सोशल मीडिया के माध्यम से आपदा के पूर्व, आपदा के समय और आपदा के पश्चात घटनाओं से संबंधित खबरों का प्रसार करने में यह एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्थापित हो चुका है। इसी संदर्भ में बस्तर संभाग के सूचनादाताओं के विचारों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि सोशल मीडिया का आपदा प्रबंधन के संबंध में अधिकतर (46 प्रतिशत) लोगों में समझ का अभाव पाया गया, जबकि कई

सूचनादाताओं में आपदा प्रबंधन से संबंधित समझ पाई गई। इसके साथ ही, बहुतायत (42 प्रतिशत) सूचनादाताओं के अनुसार सोशल मीडिया में आपदा प्रबंधन से संबंधित खबरें मिलती हैं या नहीं मिलने की बात स्वीकार की गई है। बस्तर संभाग के सोशल मीडिया उपयोगकर्ता सूचनादाताओं ने सोशल मीडिया में आगजनी, तूफान, बाढ़, भूकंप, ओलावृष्टि और सूखा संबंधी खबरें मिलने की बात स्वीकार की है। इस प्रकार, 46 प्रतिशत सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं ने इन खबरों को उपयोगी बताया और 47 प्रतिशत लोगों ने इन्हें उपयोगी नहीं माना।

निष्कर्ष

वर्ष 2005 में कोबे, जापान में आपदा जोखिम न्यूनीकरण (डीआरआर) पर विश्व सम्मेलन में आपदा प्रबंधन में आपदा तैयारी को एक महत्वपूर्ण कमी के रूप में पहचाना गया। जबकि विकसित देशों में तैयारी एक प्रमुख जिम्मेदारी है, भारत जैसे विकासशील देशों में तैयारी पर प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्ति जितना ध्यान नहीं दिया गया है। तैयारी, प्रतिक्रिया तंत्र से एक प्रगति है जो छोटे क्षेत्रों को लक्षित करते हुए स्थायी क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करती है। दूसरे शब्दों में, इसे आपदाओं से निपटने के लिए समूहों को संगठित करने की दिशा में उठाए गए कदम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ताकि वे आपदा के दौरान त्वरित कार्रवाई करने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार रहें। इसी संदर्भ में मीडिया की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है, और मीडिया को अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए आपदा प्रबंधन से संबंधित सभी तथ्यों को आमजन के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए ताकि आपदा से पूर्व तैयारी की जा सके। बस्तर क्षेत्र में भी बाढ़, आगजनी, सूखा, एवं जंगली पशुओं से खतरे संबंधी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित और प्रसारित होने वाले मीडिया में आपदा प्रबंधन की भूमिका बहुत ही नगण्य है, जो कि एक प्रकार से मीडिया जगत के लिए चिंता का विषय है।

संदर्भ सूची:

Abdulhamid, N. G., Ayoung, D. A., Kashefi, A., & Sigweni, B. (2020, March 26). A survey of social media use in emergency situations: A literature review. *SAGE Publishing*, 37(2), 274-291. https://doi.org/10.1177/0266666920913894

Anderson, E. W. (1994, October). Disaster management and the military. *GeoJournal*, 34(2), 201-205.

Anzur, T. (2000). How to talk to the media: televised coverage of public health issues in a disaster. *Prehospital and Disaster Medicine*, 15(4), 196–198.

Busà, M. G., Musacchio, M. T., Finan, S., & Fennell, C. (2015, May 18). Trust-building through social media communications in disaster management. https://doi.org/10.1145/2740908.2741724

Cheng, S., Liu, L., & Ke, L. (2020, August 20). Explaining the factors influencing the individuals' continuance intention to seek information on Weibo during rainstorm disasters. *Multidisciplinary Digital Publishing Institute*, 17(17), 6072-6072. https://doi.org/10.3390/ijerph17176072

Collins, M., Neville, K., Hynes, W., & Madden, M. (2016, June 10). Communication in a disaster - the development of a crisis communication tool within the S-HELP project. *Taylor & Francis*, 25(sup1), 160-170. https://doi.org/10.1080/12460125.2016.1187392

Kibanov, M., Stumme, G., Amin, I., & Lee, J. G. (2017, July 14). Mining social media to inform peatland fire and haze disaster management. *Springer Science+Business Media*, 7(1). https://doi.org/10.1007/s13278-017-0446-1

Luna, S., & Pennock, M. J. (2015, April 1). Social media in emergency management: Advances, challenges and future directions. https://doi.org/10.1109/syscon.2015.7116847

Nair, P. (2010). Role of media in disaster management. *Mass Communicator*, 4(1), 36-40.

Pal, I., Ghosh, T., & Ghosh, C. (2017). Institutional framework and administrative systems for effective disaster risk governance–Perspectives of 2013 Cyclone Phailin in India. *International Journal of Disaster Risk Reduction*, 21, 350-359.

Piotrowski, C., & Armstrong, T. R. (1998). Mass media preferences in disaster: A study of Hurricane Danny. *Social Behavior and Personality: an international journal*, 26(4), 341-345(5).

Shah, S. A., Seker, D. Z., Hameed, S., & Draheim, D. (2019, January 1). The rising role of big data analytics and IoT in disaster management: Recent advances, taxonomy and prospects. *Institute of Electrical and Electronics Engineers*, 7, 54595-54614. https://doi.org/10.1109/access.2019.2913340

आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005. (2024, July 25). मुखपृष्ठ | एन.डी.एम.ए., भारत सरकार. *NDMA, GoI*. Retrieved July 25, 2024, from https://ndma.gov.in/hi/

Prevention Web. (2021, June 14). Hyogo framework for action. *PreventionWeb.net: the knowledge platform for disaster risk reduction*. Retrieved July 30, 2024, from https://www.preventionweb.net/sendai-framework/Hyogo-Framework-for-Action